

वार्तालाप नं-545, सिहोर (मध्य प्रदेश), दिनांक-31.03.08
Disc.CD No.545, Dt. 31.03.08, Sehore (Madhya Pradesh)

समय: 00.10-01.15

जिज्ञासु: बाबा, बाप अभी पिछाडी में ऐसा कौनसा बल देते हैं जिससे क्रिमिनल आई बदलकर तुरंत सिविल आई बन जाती है।

बाबा: क्रिमिनल आई बदलकर तुरंत सबकी एक साथ नहीं बन जावेगी। जल्द एक खरबुजा पकता है.. वो पहले-2 पकता है। पेड़ में कोई फल पकता है तो पहले-2 पकता है और पके हुए फलों को उनमें एक फल सड़ा हुआ रख दो तो सब सड़ने लग पड़ते हैं। ऐसे ही एक जब आगे बढ़ता है और उसका प्रभाव संसार में देखा जाता है तो दूसरों को भी इच्छा होती है हम भी आगे बढ़ें। पहले आगे बढ़नेवालों की संख्या कम होती है और बाद में धीरे-2 मल्टिप्लाय होता रहता है। ऐसे नहीं चुटकी बजाते एकदम हो जाता है।

Time: 00.10-01.15

Student: Baba, which power does the Father give in the end that our *criminal eye* will change into *civil eye* immediately?

Baba: The *criminal eye* of everyone will not change [into *civil eye*] at the same time immediately. Just like when one melon ripens... it ripens first of all. When a fruit ripens on the tree; it ripens first of all and if you keep a rotten fruit among the ripe fruits, all the fruits start rotting. Similarly, when one person steps ahead and his influence is visible in the world then the others also develop a wish: "we too should step ahead". The number of those who step ahead is less first and later on it keeps multiplying gradually. It is not that it happens all of a sudden¹.

समय: 02.56-05.07

जिज्ञासु: बाबा मुरली में बोला है कि न दुख देना, न दुख लेना।

बाबा: हाँ।

जिज्ञासु: माना हम तो किसीको दुख नहीं देते...

बाबा: हाँ, बिल्कुल नहीं, बिल्कुल देवता बन गये।

जिज्ञासु: कोई हमें दुख देता है तो उसके लिए क्या करना चाहिए?

बाबा: एक दुर्योधन था शास्त्रों में उसकी टैंडेंसि ये थी कि वो दूसरों को दुख देता था वो उसे पता ही नहीं चलता था "मझे क्या किया" और दूसरा अगर उसको थोड़ी सी भी बात कह दे तो इतना अपमान, इतना अहंकार, इतना फील करता था वो सारे जीवन नहीं भूलता था। तो ऐसा ही तो नहीं है कहीं? हाँ? ऐसे भी होता है कि दूसरों का थोड़ा सा दिया हुआ दुख अपने को बहुत भासता रहता है और अपना दिया हुआ दुख ध्यान में ही नहीं आता कि हम किसीको दुख दे रहे हैं। और वो भी ये बात पुरुष लोग कहे कि हम तो किसीको दुख नहीं देते लेकिन दूसरे हमको बहुत दुख देते हैं तो पुरुषों कि कही हुई बात मान लेनी चाहिए क्या? बोलो। क्योंकि बाबा ने तो कहा- पुरुष सब दुर्योधन दुशासन। नहीं-2 उसमें हमारी भी लिस्ट

¹ cutki bajaate: in a snap of a finger.

आ जाती ह॥ तो ये बात मान लेनी चाहिए? कोई माता कहती तब तो ठीक भी था। अपने अन्दर टटोल के देखना ह॥ कि हम दूसरों को दुख देते हैं या नहीं देते हैं? दूसरों को दुख देना तब ही बन्द होगा जब हमारे अन्दर से देहभान निकल जायेगा। देहभीमान, कोई भी प्रकार का देहभीमान क्यों ना हो... मुरली में बोला ह॥ दूसरों का अपमान जरूर करेगा और अपमान से दूसरों को दुख जरूर होगा।

Time: 02.56 -05.07

Student: Baba it is said in a murli, we should neither give sorrow, nor take sorrow.

Baba: Yes.

Student: I don't give sorrow to anyone...

Baba: Yes, not at all, you have become complete deities (ironically)☺.

Student: If someone gives sorrow to us, what should we do then?

Baba: There was a Duryodhan [as mentioned] in the scriptures; he had this tendency that he didn't realize what he did to whom when he gave sorrow to others. And if someone else told him even something trivial, [he used to feel] so insulted, [he had] so much ego, he used to feel so much that he didn't forget it in his entire life. So, is it the same case here? Hum? It also happens like this that when someone else gives sorrow to us, we feel a lot and when we ourselves give sorrow to someone we don't realize at all that we are giving sorrow to someone. Moreover, if the males say this, "we don't give sorrow to anyone, but the others give us a lot of sorrow", then should we accept what the males say? Speak. Because Baba has said, all males are Duryodhan Dushaasan². No, no... I too am included in that list☺. So, should we accept this? It was ok if some mother said this. We should check within ourselves: "do we give sorrow to others or not?" We will stop giving sorrow to others only when our body consciousness finishes. Body consciousness; let it be any type of body consciousness, it was said in murli, it will certainly insult others and others will certainly feel sorrowful due to insult.

समय: 05.10-05.34

जिज्ञासु: बाबा स्वीट साइलेंस क्या ह॥

बाबा: डेड साइलेंस?

जिज्ञासु- स्वीट साइलेंस।

बाबा- स्वीट साइलेंस। स्वीट साइलेंस वो ह॥ जिसमें सिर्फ आत्मिक स्मृति रहती ह॥ डेड साइलेंस वो ह॥ जिसमें सन्यासी लोग चले जाते हैं, निल में।

Time: 05.10-05.34

Student: Baba, what is sweet silence?

Baba: Dead silence?

Student: Sweet silence.

Baba: Sweet silence. Sweet silence is that [stage] in which there is only the remembrance of the soul. Dead silence is the [stage] which the *sanyasis* reach, the *nil* [stage].

² villainous characters in the epic Mahabharata.

समय: 05.40-06.40

जिज्ञासु: कर्मातीत अवस्था क्या है।

बाबा: कर्मातीत अवस्था वो है कोई भी कर्म करे, तोप-बंदुक लेकर के सारों को खत्म कर दे और उसके ऊपर पाप न चढ़े। कर्म से अतित हो जाये वो हो गई कर्मातीत अवस्था। पाप-पुण्य का कोई लेखा-जोखा नहीं बन सकता। इसलिए गीता में कहा है कि स्वरूप निष्ठ व्यक्ति सारे दुनिया का हत्या कर दे तो भी उसके ऊपर कोई पाप नहीं चढ़ेगा। उसको स्वरूप निष्ठ कहे या कर्मातीत अवस्थावाला कहे। उसकी खुशी में भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

Time: 05.40-06.40

Student: What is *karmateet* stage?

Baba: *Karmateet* stage means, whatever action is performed..., someone finishes off everyone with cannons and guns and he is not stained by any sin. To go beyond the effect of actions is the *karmateet* stage. No account of noble and sinful deeds can be made. That is why it is said in the Gita, even if a person who is stable in the soul consciousness destroys the entire world, he will not be stained by any sin. He can be called *swaroop nishth* (the one who is stable in the soul conscious stage) or the one having *karmateet* stage. There won't be any difference in his happiness either.

समय: 06.45-07.40

जिज्ञासु: बाबा, एक है पुरुषार्थ में खड़े होना, दूसरा है चलना, दौड़ना, उड़ना और है हाईजम्प लगाना। ये हाईजम्प लगाना क्या है।

बाबा: हाईजम्प लगाना जसो शंकर जी भगवान पहले पदल चलते रहते है दौड़ते रहते है भस्मासुर पीछे-2 भागता रहता है। फिर जब देखते है कि अब नहीं सुधरता है अब नहीं होगा तो आखरी में हाईजम्प लगा देते है। जब हाईजम्प लगाते है तो विजयी हो जाते है। हाईजम्प लगाना, बल्ल के ऊपर सवारी करते है तो क्या करते है हाईजम्प लगाते है। बल्ल कौन है (किसीने कहा-ब्रह्मा) ब्रह्मा सो क्या बनता है।

जिज्ञासु- विष्णु।

बाबा- हाँ, जब हाईजम्प लगाते है तभी ब्रह्मा सो विष्णू बन जाता है।

Time: 06.45-07.40

Student: Baba, one is to stand in *purusharth*, the second is to walk, to run, to fly and next is to take a high jump. What does taking a high jump mean?

Baba: To take a high jump [means]... just like God Shankarji keeps walking at first, he keeps running; Bhasmasur³ keeps running behind him. Then when he sees that he (Bhasmasur) is not improving, nothing is going to happen now, then he takes a high jump at last. He becomes victorious when he takes a high jump. To take a high jump... when he rides on the bull, what does he do? He takes a high jump. Who is the bull? (Someone said: Brahma) What does Brahma transform into?

Student: Vishnu.

Baba: Yes, he becomes Vishnu from Brahma when he takes a high jump.

³ a demon who received a boon from Shankar to burn to ashes whosoever head he touched with his hand and in end started to chase Shankar himself.

समय: 08.00-08.40

जिज्ञासु: भक्तिमार्ग में शंकर को विष पीते हुए क्यों हए

बाबा: विष पीते हुए क्यों दिखाते हए इसमें किसी में दम नहीं तो उन्होंने कहा-हम ही पी ले क्योंकि और तो सब डरते हए कि हम विष पियेंगे तो मर जायेंगे और वो तो समझते हए हम तो मरनेवाले हए नहीं। न हम पद्म होते हए और न हम मरते हए इसलिए उन्होंने उठाया और पी लिया। बच्चू कुछ आगे पुछ लिया करो। समझ में आ गई बात क्या? समझ में आया? नहीं आया? (जिज्ञासु-आया) आया तो ठीक हए

Time: 08.00-08.40

Student: Why is Shankar shown to be drinking poison on the path of bhakti?

Baba: Why is he shown to be drinking poison? Nobody had that courage, so he said: I will drink it myself. Because all the others are afraid: 'if we drink poison, we will die' and he thinks, I am not going to die, I am neither born, nor do I die. That is why he took the poison and drank it. Child, ask something beyond that. Did you understand the subject? Did you? Didn't you? (Student said: I did.) It is ok if you understood.

समय: 08.45-10.15

जिज्ञासु: बाबा हर आत्मा के सतोप्रधान बनने के लिए चार आयाम होते हैं तो रामवाली आत्मा के लिए 76 में चौथा आयाम होता हएया वहाँ से शुरू होता हए

बाबा: रामवाली आत्मा क्या नर से नारायण बन जाती हएसन् 76 में? सम्पूर्ण बन जाती हए कंचनकाया बन जाती हए बनती हए आत्मा कंचन बन जाती हए आत्मा कंचन बनने की निशानी हए कि जो भी आत्मा सामने आवेगी वो कनवर्ट हो जावेगी। ऐसी पॉवर सन् 76 में कहे? नहीं।

जिज्ञासु- बाबा, तो सम्पन्नता वर्ष कहा गया ना 77 को।

Time: 08.45-10.15

Student: Baba, for every soul there are four stages through which it becomes *satopradhan* (consisting in the quality of goodness and purity). So, is the year '76 the fourth stage for the soul of Ram or does it begin from there?

Baba: Does the soul of Ram become Narayan from *nar* (man) in the year '76? Does he become complete? Does he receive a golden body (*kanchan kaya*)? Does he receive it? Does the soul become golden? The indication of the soul becoming golden is that whichever soul comes in his contact will convert. Will it be said that [he achieved] such a power in the year '76? No.

Student: Baba, then the year '77 was called the year of completion, wasn't it?

बाबा- सम्पन्नता वर्ष बेसिकली बेसिक पढ़ाई के आधारपर कहा गया। बेसिक पढ़ाई पूरी हुई थी सन् 76 में या कि एडवान्स पढ़ाई पूरी हुई थी?

जिज्ञासु- बेसिक।

बाबा- बेसिक पढ़ाई पूरी हुई। उस आधारपर सम्पन्नता वर्ष सन् 77 को मनाया गया।

जिज्ञासु- बाबा ऐसे करते-2 वो पहला आयम कहेंगे उसको? तो चौथा 18 तक होता हएक्या?

बाबा- जसके बेसिक नॉलेज के भी सोपान होते हैं कक्षा 1, कक्षा 2, कक्षा 3, कक्षा 4, 5 ऐसे ही एडवान्स नॉलेज के हायर क्लासेस के भी सोपान होते हैं जम दे जाम दे कोई नहीं बनता। टाइम लगता है ये ड्रामा जूँ मिसल चलता रहता है

Baba: It was called the year of completion basically, on the basis of the basic study. Did the basic study complete in the year '76 or did the advance study complete?

Student: Basic.

Baba: The basic study completed. On the basis of that the year '77 was celebrated as the year of completion.

Student: Baba, in this way, will that be called the first stage? So, is the year 2018 the fourth stage?

Baba: Just like there are steps in the basic knowledge as well: class 1, class 2, class 3, class 4, 5, similarly there are steps in the higher classes of the advance knowledge too. Nobody becomes [perfect] all of a sudden. This drama moves like a louse⁴.

समय: 10.20-13.10

जिज्ञासु: बाबा सिविलाइज्ड का मतलब क्या है और सिविलाइज्ड बनने के लिए किस चीज़ पर विशेष अटेंशन देना होगा?

बाबा: सिविलाइज बनने के लिए श्रीमत पर विशेष अटेंशन देना होगा। आँखें अगर सिविलाइज बन जाये तो और क्या चाहिए? सबसे ज्यादा सेंसिटिव अंग कौनसा है, सबसे जास्ती सेंसिटिव अंग कौन सा है आँखें। आँखें अगर सिविल बन जाये तो समझो देवता बन गया। आँखों के लिए ही कहा गया है जसकी दृष्टि वसूरी सृष्टि। तो मनुष्य की दृष्टि तो मनुष्य जसकी ही होगी क्योंकि वो तो मनवाला प्राणी है अपने मन को ही कन्ट्रोल में नहीं कर पाया तो मनुष्य कहा गया। मन को अमन जो बना ले वो देवता हुआ। देवताओं को कोई चीज़ की इच्छा करने की जरूरत नहीं। सब कुछ अपने आप मुहब्बा होता रहता है "इच्छा मात्रम् अविद्या" तो ये तरिका हो गया। हमें कुछ नहीं चाहिए। सब कुछ तेरा कुछ नहीं मेरा। जरूर सिविलआय बनेंगे।

Time: 10.20-13.10

Student: Baba, what is the meaning of *civil eye* (civilized eye) and on what do we have to pay special attention in order to become [the one with] *civil eye*?

Baba: You will have to pay special attention on *shrimat* in order to become [the one with] *civil eyes* (civilized eye). If the eyes become *civil eyes*, what else do you require? Which is the most sensitive organ? The eyes. If the eyes become civilized consider that you have become a deity. It is said only for the eyes: "As is the vision so is the creation". So, the vision of a human being will be only like a human being because he is a creature having mind. He was called a human being because he wasn't able to control his own mind. The one who makes his mind *aman* (peaceful) is a deity. There is no need for the deities to desire for something. Everything becomes available to them naturally; there is not even a trace of the knowledge of desires. So, this is the method. "We don't want anything, everything is yours and nothing is mine". You will certainly become [the one with] *civil eyes* [then].

⁴ moves slowly

जिज्ञासु- लेकिन बाबा आँख ह॥आँखों को व्यक्ति कंट्रोल कर ले, हरेक को आत्मा के रूप में देखे। और जसो अभी बाबा से दृष्टि लेते ह॥माना (आँखे) एकाग्र हो जाये, कंट्रोल तो आँखें झपक क्यों जाती ह॥

बाबा- ज्यादा मेहनत करेंगे तो झपकी नहीं आयेगी?

जिज्ञासु- माना सभी लोंगो की थोड़े झपक जाती ह॥आँख.....

बाबा- हाँ, थोड़े-2 सब विकारी बनते होंगे। कहीं आँख से विकारी बनते होंगे, कहीं कानों से विकारी बनते होंगे, कहीं मुँख से विकारी बनते होंगे, कहीं भ्रष्ट कर्मेन्द्रियों से विकारी बनते होंगे तो थकान पदा नहीं होगी? होगी या नहीं होगी?

जिज्ञासु- होगी।

बाबा- तो थकान पदा होगी तो नींद भी आयेगी।

जिज्ञासु- माना एकचित नहीं होती ह॥आँख।

बाबा- अब नम्बरवार ह॥ना सब; एक जसो तो नहीं ह॥ कि नम्बरवार नहीं हैं? नम्बरवार हैं।

Student: Baba, but the eyes... if someone controls the eyes and sees everybody in the form of a soul; suppose now when we take *drishti* from Baba [the eyes] become focused, they become controlled, then why do we doze?

Baba: Will you not doze if you work hard?

Student: But the eyes of everyone don't doze...

Baba: Yes, everyone must be becoming vicious to some or the other extent. Sometimes they would be becoming vicious through the eyes; sometimes they would be becoming vicious through the ears, sometimes through the mouth, sometimes through the corrupt organs of action, so will they not feel tired? Will they or will they not?

Student: They will.

Baba: So, if they feel tired, they will feel sleepy too.

Student: [I mean to say:] they eyes don't remain steady.

Baba: Now, all are number wise, aren't they? They are not alike. Or are they not number wise? They are number wise.

समय: 13.12-15.07

जिज्ञासु: बाबा भक्तिमार्ग में बताया गया मिट्टी का शिवलिंग बनाते हैं और गोबर का गणेश क्यों बनाते बाबा?

बाबा: गणेश जी जो ह॥उनकी पदाईश गोबर से होती ह॥ क्या? गऊ किसे कहते ह॥ गऊ कहते ह॥ जो गाय जसो स्वभाववाली हो माना कन्याये-मातायें सब ह॥गऊ और उनका वर। 'गौ वर' माना जो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ कन्याओं-माताओं के संकल्पों में से भावना निकलती ह॥ वो ही वास्तव में गोबर ह॥ भावना के आधारपर जब देखे तो पुरुषों में ज्यादा श्रेष्ठ भावना होती ह॥ या कन्याओं-माताओं में ज्यादा श्रेष्ठ भावना होती ह॥

जिज्ञासु- कन्याओं-माताओं में।

बाबा- इसलिए गणेश जी की पदाईश पुरुषों से हुई ह॥ या कन्याओं-माताओं से हुई ह॥

जिज्ञासु- कन्याओं-माताओं से।

बाबा- कौनसी कन्या-माता थी? पार्वती। पार्वती के मल्ल से पद्म हुआ। ये टट्टी -पेशाब हूँ ये भी मल्ल हूँ ना शरीर का? शरीर का जो किचड़ा हूँ वो ही मल्ल कहा जाता हूँ

Time: 13.12-15.07

Student: Baba, it is said on the path of bhakti that that a *shivling* is made of mud; and why is a Ganesh made of cow dung?

Baba: Ganeshji is born through cow dung. What? What is called a '*gau*' (cow)? The one who has a cow like nature is called *gau*; meaning all the virgins and mothers are cows; and their *var* (elevated). '*Gau var*' means the feelings that emerge from the most elevated thoughts of the virgins and mothers is *gobar* (c ow dung) in reality. If it is seen on the level of feelings, do men have more elevated feelings or do the virgins and mothers have more elevated feelings?

Student: The virgins and mothers have.

Baba: That is why is Ganeshji born through men or through the virgins and mothers?

Student: Through the virgins and mothers.

Baba: Which was that virgin or mother? Parvati. He was born through the dirt of Parvati. Faeces and urine are also the dirt of the body, aren't they? The waste of the body is itself called dirt.

समय: 15.10-15.35

जिज्ञासु: बाबा सालिम बुद्धि किसे कहेंगे?

बाबा: सालिम माना सगीर बुद्धि। एक होता नाबालिग, एक होता हूँ बालिग। बालिग माना सगीर, परिपक्व बुद्धि हो जाये। जिसकी अकल की दाढ़ निकल आती हूँ तो कहते हूँ पक्का बुद्धि हो गया।

Time: 15.10-15.35

Student: Baba, who will be called [the one having] a developed intellect (*saalim buddhi*)?

Baba: Developed intellect means matured intellect (*sagir buddhi*). One is immature [intellect] and the other is matured [intellect]. Mature means developed; the intellect should become mature. It is said [about] the person who gets a wisdom tooth: he has become the one with a matured intellect.

समय: 15.40-17.27

जिज्ञासु: बाबा मुरली में बोला हूँ २०१८ में तीनों आत्मा, तीनों मूर्तियाँ संपन्न हो जायेगी।

बाबा: तीनों मूर्तियाँ कौन-2?

जिज्ञासु- ब्रह्मा, विष्णू, शंकर।

बाबा- ठीक हूँ पहले प्रत्यक्षता किसकी हुई? पहले पहचान एडवान्स पार्टी को कौनसी मूर्तियों की हुई?

जिज्ञासु- प्रजापिता की।

बाबा- नहीं। अकेला चना भाढ़ नहीं फोड़ता। जब शिवबाप आते हूँ तो भी अकेले नहीं आते; तीन मूर्तियों के साथ आते हूँ लेकिन उस समय प्रत्यक्षता नहीं हुई। लेकिन पहले-2 तीन मूर्तियों की प्रत्यक्षता होती हूँ तो जिन मूर्तियों की प्रत्यक्षता होती हूँ वही मूर्तियाँ सन 18 में सम्पन्न भी पहले होती हूँ

Time: 15.40-17.27

Student: Baba it has been said in the murli, three souls, all the three personalities will become complete in 2018.

Baba: Which three personalities?

Student: Brahma, Vishnu and Shankar.

Baba: Ok. Who was revealed first? Which personality did the advance party recognize at first?

Student: [The personality] of Prajapita.

Baba: No. A big task is not accomplished by one person (*akela cana bhad nahi phodta*). When the Father Shiv comes, He doesn't come alone; He comes along with the personalities, however the revelation did not take place at that time. But... the revelation of the three personalities takes place at first. So, the personalities who are revealed, the same personalities achieve completion in the year 2018 at first.

जिज्ञासु- सम्पन्न होती ह॥ फिर बोला ह॥ फिर कहा जायेगा संवत् 1-1-1 लिखा जायेगा।

बाबा- ठीक बात ह॥

जिज्ञासु- फिर दूसरी मुरली में सन् 2036 में संवत् 1-1-1 कहा गया।

बाबा- नहीं। जब 2036 होगा तो दिन गिनने की जरूरत रहेगी?

जिज्ञासु- नहीं रहेगी।

बाबा- फिर, वहाँ तो सुख ही सुख हो जाता ह॥ दिन तो आदमी तब गिनता ह॥ जब दुख का टाइम होता ह॥ तो कहते ह॥ दिन गिन रहे ह॥ 2036 के बाद तो कम्प्लिट सतयुग हो जावेगा। दिन गिनने की बात ही नहीं, हिस्ट्री बनाने की बात ही नहीं। फिर ढाई हजार साल के बाद दिन गिनना शुरू करेंगे। इसलिए ढाई हजार साल की हिस्ट्री हमारे पास मौजूद ह॥ एक-2 दिन कर के लोंगो ने ढाई हजार साल बना लिया।

Student: They achieve completion, then it is said: 'it will be said, it will be written the year 1-1-1'.

Baba: That is correct.

Student: Then it was said in another murli that it will be written 'year 1.1.1' in the 2036.

Baba: No. Will there be any need to count days when it is the year 2036?

Student: No, there won't.

Baba: Then? There is only happiness over there. A man counts days in sorrow. Then they say: "We are counting days". There will be complete Golden Age after 2036. There won't be any question of counting days at all; there won't be the question of writing history at all. Then we will start counting days after 2500 years. That is why the history of 2500 years is available with us. The people have made [the history] of 2500 years by counting each day.

समय: 17.30-18.30

जिज्ञासु: बाबा भक्तिमार्ग में बताते हैं कि देवियों की जो सवारी ह॥ वो भी शेर की बताई ह॥

बाबा: सब देवियों की सवारी शेर की ह॥

जिज्ञासु- नहीं-2, कोई-2 देवियों कि और शंकर जी को भी मृग की छाल शेर की बताई ह॥ भक्तिमार्ग में। तो उसका क्या रहस्य ह॥

बाबा- मृग छाला तो मरे हुए की खाल होती है और शेर तो जिंदा होता है वस्त्र भी शंकर जी मरघटा पसंद करते है या जिंदे आदमियों की जो शहर है वो पसंद करते है

जिज्ञासु- मरघटा।

Time: 17.30-18.30

Student: Baba in the path of *bhakti* it is said that the *devis* (female deities) ride on a lion.

Baba: Do all the *devis* ride on a lion?

Student: No, some *devis*. And Shankarji is also shown [wearing a] deer's skin/sitting on lion's skin in the path of *bhakti*. So, what is its secret?

Baba: A deer's skin is the skin of a dead [deer] and a lion is living. Anyway, does Shankarji like a graveyard or does he like a city of living people?

Student: Graveyard.

बाबा- मरघटा पसंद करते है तो उनको मरे हुए शेर की खाल दिखाते है

जिज्ञासु- देवियों को शेर की सवारी दिखाते है

बाबा- हाँ, तो देवियों ने प्रभिटिकल में चतन्य शेरों के ऊपर सवारी की होगी। जो शेर किसी के कन्ट्रोल में नहीं आता। जो जंगल का राजा शेर कोई के भी कन्ट्रोल में नहीं आता वो देवी के कंट्रोल में आ जाता है

Baba: He likes a graveyard. So, he is shown to sit on a lion's skin.

Student: The *devis* are shown to ride on a lion.

Baba: Yes, the *devis* must have ridden on living lions in practical; the lion who doesn't come under anyone's control. The lion, the king of the jungle who doesn't come under anyone's control, comes under the control of the *devi*.

समय: 18.35-19.55

जिज्ञासु: बाबा श्रवण को बताते हैं कि माता-पिता अंधे है टोलियों में रखकर तीर्थ कराये वो कौनसी बात होगी? कोई बुद्धिरूपी... किस समय की बात है

बाबा- ओहो, बुद्धि को एकाग्र कर लो। एक शिवबाबा दूसरा न कोई। हर बात पहले शिवबाबा के ऊपर लागू करो। शिवबाबा जिस तन में आते है रामवाली आत्मा के तन में तो तन में आने से पहले वो आत्मा बेसिक ज्ञान में आती है या नहीं आती है बेसिक ज्ञान में आती है जब बेसिक ज्ञान में आती है शुरू-2 में तो वो बेसिक ज्ञान में अपना माता-पिता कोई को मानती है या नहीं मानती है

Time: 18.35-19.55

Student: Baba, it is said for Shravan [kumar] that his parents were blind. He put them in baskets and took them around pilgrimage places. What is that? [Is it some] intellect like... it is about which time?

Baba: Oh, focus your intellect. One Shivbaba and no one else. Apply everything to Shivbaba first. The body which Shivbaba enters, the body of the soul of Ram, does that soul come in the basic knowledge before [Shivbaba] enters his body or not? He comes in the basic knowledge. When he comes in the basic knowledge at first, does he consider someone his mother and father or not?

जिज्ञासु- मानती ह॥

बाबा- कौन? ब्रह्मा और?

जिज्ञासु- आदिमाता और आदिपिता ।

बाबा- आदिमाता-आदिपिता को मानती ह॥ वो जानती भी नहीं ह॥ बेसिक में। बेसिक में आने मात्र से ही एडवान्स ज्ञान आ जाती ह॥ क्या? ब्रह्मा-सरस्वती को माता-पिता मानती ह॥ तो ब्रह्मा-सरस्वती ज्ञान के अंधे थे, एडवान्स ज्ञान के अंधे थे या सोझरे थे? अंधे थे। उनको कंधे पर रखकर के और सारी दुनिया घुमाय दी।

Student: He does consider.

Baba: Who? Brahma and?

Student: *Adimata* and *Adipita* (the mother and the father of the beginning).

Baba: Does he believe in the *Adimata* and *Adipita*? He doesn't even know them in the basic knowledge. Does he come in the advance knowledge just on coming in the basic knowledge? He considers Brahma – Saraswati his mother and father. So, were Brahma and Saraswati blind in knowledge, were they blind in the advance knowledge or were they the ones having sight? They were blind. He put them on his shoulders and took them around the entire world.

समय: 20.00-22.35

जिज्ञासु: बाबा प्रह्लाद भाई का प्रश्न ह॥

बाबा: अच्छा, आप ब्रह्माबाबा बन गये प्रह्लाद भाई के?

जिज्ञासु- पूछ नहीं पा रहा ह॥ बाबा; प्रश्न थोड़ा हेवी ह॥

बाबा- अच्छा-2,

जिज्ञासु- उनका ये कहना ह॥ कि जिस प्रकार से रामवाली आत्मा ने 6 साल पुरुषार्थ किया और आज शिवबाबा के रूप में कार्य कर रही ह॥ तो क्या अगले कल्प में हम इतना पुरुषार्थ करके उस पोस्ट को पा सकते ह॥ क्या?

Time: 20.00-22.35

Student: Baba, Prahalad bhai's question is ...

Baba: Accha, have you become Brahma baba for Prahalad bhai?

Student: Baba, he is unable to ask; the question is a bit *heavy*.

Baba: Accha-2

Student: He wants to ask: just like the soul of Ram made *purusharth* (spiritual effort) for 6 years and is working today in the form of Shivbaba, can we achieve the same post after making such *purusharth* in the next *kalpa*?

बाबा- बाबा ने तो ये बोला ह॥ बनी बनाई बन रही; अब कुछ बननी नाय। इसका क्या मतलब हुआ? इसका मतलब ये हुआ कि 63 जन्म जिसने जप्ते-2 कर्म किये ह॥ उन कर्मों के अनुसार बनी बनाई बन रही; अब कुछ बननेवाली नहीं ह॥ माना 63 जन्मों में जिसने विधर्मियों का लगातर विरोध किया ह॥ सामना किया ह॥ अकेला होकर के भी सामना किया । सारी दुनिया भल दुश्मन बन जाये तो भी मुकाबला किया तो ऐसी निष्ठा अगर शिव के प्रति, निराकार के प्रति किसी की आदि से अंत तक जुटी रही ह॥ तो उस आत्मा के प्रति शिव पहले आकर्षित होगा या किसी दूसरे के प्रति आकर्षित हो जायेगा? उसी के प्रति आकर्षित होगा। और ये भी

बोला ह॥गोंड इज वन तो गोंड का बच्चा भी वन कहा जाता ह॥ ऐसे नहीं कि गोंड के दो बच्चे ह॥ गोंड निराकार ह॥तो गोंड का अव्वल नंबर निराकार पहली स्टेज में धारण करनेवाला बच्चा भी एक ही ह॥ इसलिए एक ही शंकर ह॥जो देवताओं में बड़ा माना जाता ह॥बड़ा बच्चा बाप समान होता ह॥और उसका नाम शिव के साथ जोड़ा जाता ह॥ इसलिए कोई दूसरी आत्मा अगले कल्प में पुरुषार्थ कर के आगे बढ़ जाये तो फिर हुबहु रिपीटिशन होनेवाली बात झूठी हो जाती ह॥या सच्ची हो जावेगी? झूठी हो जाती ह॥

Baba: Baba has said, whatever is happening is preordained and nothing new will happen now. What does this mean? This means, everything has been predetermined according to whatever actions someone performed in his 63 births; nothing new is going to be enacted now; meaning the one who has opposed the *vidharmis*⁵ continuously in the 63 births, the one who has confronted them, the one who confronted them even on being alone; the one who confronted them even if the entire world became his enemy, so if someone has such loyalty for Shiv, for the incorporeal one from the beginning till the end; will Shiv be attracted to that soul first or will He be attracted to someone else? He will be attracted to him alone. And it is also said, 'God is one, so God's child is also said to be one'. It is not so that God has two children. God is incorporeal, then the No.1 child of God who assimilates the incorporeal stage first of all is also one. That is why, there is only one Shankar who is considered to be senior among the deities, the elder child is equal to the father and his name is combined with that of Shiv. That is why if some other soul makes *purusharth* and goes ahead of him (the soul of Ram), then the subject of the exact repetition becomes false or will it become true? It becomes false.

समय: 22.40-23.10

जिज्ञासु: कक्कयी की दिखाई ह॥कि कक्कयी ने मतलब वर मांगे थे राम के लिए वनवास और भरत को राजपाट। इसका क्या कारण ह॥

बाबा: अपने बच्चे के लिए राज्य माँग लिया ये तो कौनसी औरतों का काम होता ह॥ जिनकी दृष्टि कई-2 के ऊपर जाती ह॥तो उनका नाम कक्कयी होता ह॥ वो अपने कुल की परवाह थोड़े ही करती ह॥कि कुल की कान बची रहे। उन्हें स्वार्थ ज्यादा याद आयेगा या परमार्थ ज्यादा याद आयेगा? स्वार्थ ज्यादा याद आयेगा।

Time: 22.40-23.10

Student: It is shown for Kaykaye that she asked for two boons, [they were] to send Ram on exile and to hand over the kingdom to Bharat. What was its reason?

Baba: She asked the kingdom for her son, so this is the work of which women? Their eyes go on many (kai-kai) [men], their name is Kaykaye. They don't worry about their family, that the honour of the family should be saved. Will they care about their selfishness more or about selflessness? They will care about selfishness more.

समय: 23.22-24.55

जिज्ञासु: निराकार राम तो शिव ह॥और साकार राम पुरुषोत्तम।

बाबा: निराकार राम शिव ह॥

⁵ Those whose beliefs and practices are opposite to that set by the Father

जिज्ञासु- शिव को निराकार राम कहा गया ह॥वो साकार राम में प्रवेश करता ह॥

बाबा- अरे, जो निराकार ह॥उसका नाम राम नहीं ह॥ उसका एक ही नाम ह॥ उसकी बिंदी का नाम शिव ह॥ उसका नाम कभी बदलता नहीं ह॥ मेरा नाम तो शिव ही ह॥और वो मेरी बिंदी का नाम ह॥ बिंदी जब तक शरीर धारण न करे तब तक कोई कर्म नहीं कर सकती। इसलिए बिंदी को शिव कहेंगे और शिव को राम नहीं कहेंगे।

जिज्ञासु- शास्त्रों में जप्ते एक नाम आया ह॥परशुराम।

बाबा- शास्त्रों में तो अगडम-बगडम जाने क्या-2 आया ह॥ उन्होंने राम को भी भगवान कह दिया, परशुराम को भी भगवान कह दिया। परशुराम को 4 कला सम्पूर्ण कर दिया, कृष्ण को 16 कला सम्पूर्ण कर दिया, राम को 14 कला सम्पूर्ण कर दिया। कोई तुकबंदी ही नहीं। और जो कलाहिन कलियुग में होते ह॥उनका नाम कलंकीधर रख दिया। वो भी भगवान हो गया। शास्त्रों की बात हम क्यों उठायें?

Time: 23.22-24.55

Student: The incorporeal Ram is Shiv and the corporeal Ram is *purushottam* (the highest among all souls).

Baba: Is the incorporeal Ram Shiv?

Student: Shiv is said to be the incorporeal Ram, He enters the corporeal Ram.

Baba: Arey, the name of the one who is incorporeal is not Shiv. He has only one name. The name of His point is Shiv. His name never changes. "My name is only Shiv and that is the name of my point". Unless the point takes on a body it cannot perform any actions. That is why the point will be called Shiv and Shiv will not be called Ram.

समय: 27.40-30.50

जिज्ञासु: बाबा ने हृद की पढ़ाई को डोंगली पढ़ाई क्यों कहा ह॥

बाबा: हृद की पढ़ाई को डोंगली पढ़ाई इसलिए बोला ह॥कि हृद की पढ़ाईयाँ जो आज पढ़ायी जा रही ह॥स्कूलों में, खासकर के भारत में वो विदेशी पढ़ाईयाँ ह॥या स्वदेश की पुरानी परम्परायें ह॥ सारी विदेशी पढ़ाईयाँ आ चुकी ह॥ और उन विदेशी पढ़ाईयाँ में जो बच्चे पढ़ाई पढ़कर के निकलते ह॥वो यार-प्यार को महत्त्व देते ह॥या भारतीय पुरानी परम्पराओं को महत्त्व देते ह॥कि माँ-बाप जहाँ हमको अर्पण करेंगे वहाँ हम अर्पण होकर सारा जीवन रहेंगे? तो जीवन का लक्ष्य विदेशी बन जाता ह॥या स्वदेशी बन जाता ह॥ विदेशी बन जाता ह॥ इसलिए डोंगली पढ़ाई पढ़ी। क्योंकि विदेशियों में तो ये बुरा नहीं माना जाता कि कन्या या कोई पुरुष ह॥वो अनेक शादियाँ करे, अनेक बार तलाक दे, डायवोर्स दे उसको बुरा नहीं मानते; बहुत अच्छा ह॥ सुख-शांती से रहो। जब तक जीओ सुख से जीओ। किसी को दुख होता ह॥ किसी को सुख होता ह॥इससे कोई मतलब नहीं। अपने सुख से काम। किसी की आत्मा को ठेस पहुँचती ह॥इससे कुछ भी लेना-देना नहीं और दूसरे देश जो ह॥वो भावना प्रधान देश नहीं ह॥ कुत्ते में कहे भावना होती ह॥ होती ह॥ कुत्ते में क्या भावना होगी? इसलिए बताया भारत कि जो पढ़ाई ह॥वो डोंगली पढ़ाई ह॥ कुत्ता और कुत्तियाँ बनाने वाली पढ़ाई ह॥ वस्त्र भी भारत में जो आज पढ़ाई पढ़ायी जा रही ह॥वो राजा बननेवाली पढ़ाई पढ़ायी जा रही ह॥लक्ष्मी-

नारायण बननेवाली पढ़ाई पढ़ायी जा रही है। दास-दासी बनने की पढ़ाई पढ़ायी जा रही है। दास-दासी माना नौकर, सर्विस करनेवाला। कौनसी पढ़ाई पढ़ायी जाती है नौकर बनने की पढ़ाई पढ़ायी जाती है। सब बड़े खुशी से कहते हैं हम पढ़ाई पढ़कर क्या करेंगे? नौकरी करेंगे। अरे, बड़े से बड़े ऑफिसर भी करेंगे तो भी कोई मिनीस्टर के अण्डर काम करना पड़ेगा कि नहीं? करना पड़ेगा। तो दास-दासी हुआ ना? और भारत की पढ़ाई क्या है भारत की प्राचीन परम्परा की पढ़ाई क्या है जो भगवान ने पढ़ायी थी? बच्चे, मैं तुमको ये पढ़ाई पढ़ाकर राजा बनता हूँ। राजा किसी के अधिन नहीं होता। जो अधिन होते हैं वो राजयोग नहीं सीखते हैं।

Time: 27.40-30.50

Student: Why did Baba call the limited (worldly) studies *dogly* studies?

Baba: The limited studies are called *dogly* studies because the limited studies that are being taught in schools, especially in India, are they the foreign studies or are they the old traditions of India? All the foreign studies have come [to India]. And do the children who come after studying those foreign studies give importance to love affairs or do they give importance to the old Indian traditions [saying:] wherever our parents surrender us, we will live surrendered there for our entire life? So, does the aim of their life become foreign (*videshi*) or Indian (*swadeshi*)? It becomes foreign. That is why [it is as if] they studied the *dogly* study. Because in foreign, it is not considered bad if a girl or a man marries many times, if they give divorce many times, they don't consider it bad; [they think:] "It is very good. Live happy and live peacefully. Live happily as long as you live". They don't care whether someone feels sorrowful or happy. They care about their own happiness. They don't have anything to do if some soul is hurt; the other countries are not countries where compassion predominates. If it is said that dogs have feelings.... Do they have? What feelings will a dog have?

That is why it was said, the studies of India are *dogly* studies. It is the study that makes dogs and bitches. Anyway, the study that is being taught in India, is it the study that makes someone into kings, that makes someone Lakshmi Narayan or is the study that makes someone *das dasi* being taught? *Das dasi* means a servant, those who do *service* (job). Which study is being taught? The study that makes someone a servant is being taught. Everyone says with great pleasure: what will we become after studying? We will do service. Arey, even if someone becomes a very big officer will they have to work under the control of some minister or not? They will have to work. So, they are servants, aren't they? And what is the study of India? What is the study of the ancient tradition of India that God taught? "Children, I make you into kings after teaching this study". A king doesn't stay under anyone's control. Those who remain under someone's control do not learn Rajyoga.

समय: 32.30-37.50

जिज्ञासु: बाबा, बोला है कि विनाश के टाइम पर हर अणू अपना साइकल पूरा करता है जहाँ से उसने शुरू किया है तो जो जम्बू द्वीप बचता है वो अपना साइकल कैसे पूरा करता है

बाबा: प्रश्न आया-दुनिया का हर अणू-2 अपना साइकल पूरा करता है तो विनाश होने के बाद जो जम्बू द्वीप बचता है उसका साइकल कैसे पूरा हुआ? वास्तव में जम्बू द्वीप कोई अभी है नहीं जो बचेगा। अभी है जम्बू द्वीप दुनिया में क्या? नहीं है। कुछ नहीं बचेगा। जो माउन्ट आबू का पहाड़ है जो ग्रेनाइट के बड़े पत्थर का बना हुआ है वो भी खलास हो जावेगा। 2036 में जब बड़े-2 भूकम्प आवेंगे तो वो भी खलास हो जावेगा। इतना बड़ा भूकम्प आवेगा

कि वो भी गर्त में समा जायेगा। अरे, चंद्रमाँ जल्ला उपग्रह, जो पृथ्वी के चारों ओर घूम रहा हू वो ही पृथ्वी में मिक्स हो जायेगा। तो जम्बू द्वीप की तो बात ही क्या। इस दुनिया में जो कुछ भी हू पुराना, जो कुछ इन आँखों से देखा जा रहा हू वो सब क्या होनेवाला हू भस्म होनेवाला हू

Time: 32.30-37.50

Student: Baba, it is said that at the time of destruction every atom completes its cycle from the place where it began. So, does the *Jambu dweep*⁶ (the Indian subcontinent) that survives completes its cycle?

Baba: A question has been asked: Every atom of the world completes its cycle, then how does the cycle of the *Jambu dweep*, that survives destruction, complete? Actually, the *Jambu dweep* does not exist now that it will survive. Is there *Jambu dweep* in the world now? There isn't. Nothing will survive. The mountain of Abu which is made of a big granite stone will be destroyed as well. Even that will be destroyed when big earthquakes take place in 2036. Such a big earthquake will take place that even that (Mt. Abu) will be buried in the chasm [of the earth]. Arey, even a satellite like the Moon which is rotating around the Earth will *mix* (unite) with the Earth. So, where is the question of the *Jambu dweep*. Everything that is old in this world, whatever is visible to these eyes; what is going to happen to all that? It is going to be burnt to ashes.

जिज्ञासु- बाबा ने ही तो कहा हू कि जमीन खरीदो माउन्ट आबू में जाकर

बाबा- तुम्हें 36 तक जिंदा रहने की आस हूया पहले ही मर जाना हू आस हूया नहीं?

जिज्ञासु- आस हूना।

बाबा- आस हू तो अगर आस हू तो माउन्ट आबू का जो पहाड़ हू जहाँ आदि से लेकरके अंत तक तपस्या का प्रभाव बना रहेगा; सारी दुनिया में हलचल होती रहेगी और वहाँ वो पहाड़ अंत तक अचल रहेगा। अचल माना ही पहाड़, अडोल।

जिज्ञासु- तो बाबा जो ब्राह्मण बच्चे हू जो पक्षे वाले हैं वो खरिद रहे हैं प्लॉट...

बाबा- तो पक्षे ही वालों के लिए बोला हू जिनको समस्या ये सामने हू कि इतना पक्षा हमारे पास हू कम्पनियाँ सारी फेल होती जा रही हू जो शेयर मार्केट हू सब डूबते जा रहे हू बैंको का भी कोई ठिकाना नहीं हू आज चल रही हैं; कल पता नहीं उनका क्या हाल हो। बड़े-2 जो कारखाने हू वो सब ठप होते जा रहे हैं। मुरली में बाबा ने बोला- सब धंधों में हू नुकसान; सिवाय एक ईश्वरीय धंधे के। तो जब बैंकिंग का धंधा ही चौपट होनेवाला हू इन्शोरेन्स कम्पनियाँ ही खलास होनेवाली हू तो जिनके पास बहुत पक्षा, बहुत प्रॉपटी हू वो क्या करे? कहाँ ले जाके डाले?

Student: Baba himself has said: go and purchase land in Mt. Abu.

Baba: Do you wish to live till 2036 or do you want to die before that? Do you wish or not?

Student: We do wish, don't we?

Baba: You wish. So, if you wish, then the mountain of Abu where the influence of *tapasya* (meditation) will be maintained from the beginning till the end; there will be disturbances in

⁶ the central one of the seven continents surrounding Mount Meru; the central division of the known world, including or coexistent with India

the entire world and that mountain there will remain steady (*acal*) till the end. *Acal* itself means a mountain, stable.

Student: So, Baba the Brahmin children; the ones who have money are purchasing plots...

Baba: It has been said only for those who have money, who have this problem in front of them: “we have so much money; all the companies are failing, all the share markets are collapsing, the banks cannot be relied upon either. Today they are working, who knows what will happen to them tomorrow. All the big factories are collapsing”. Baba has said in the Murli, there is a loss in all the businesses, except the one godly business. So, when the very business of banking is going to be ruined, when the insurance companies are going to fail; what should those who have lots of money, those who have lots of property do? Where should they invest it?

जिज्ञासु- माउन्ट आबू में।

बाबा- तो कम से कम जब तक जिंदा रहने की खातरी ह॥ इस पुराने शरीर की तो जहाँ खातरी ह॥ वहाँ तो डाल सकते ह॥ क्योंकि मुरली में पहले से ही बोला हुआ ह॥ ‘ये सारा आबू खरीद करना पड़ेगा। तब बच्चे आकर के यहाँ ठहर सकेंगे। सारी दुनिया का विनाश तुम बच्चे यहाँ माउन्ट आबू से देखेंगे बच्चे-2।’ तो सही बात लगती हो तो करो; नहीं लगती हो तो न करो।

जिज्ञासु- बाबा लगती तो ह॥ लेकिन पक्का नहीं ह॥ जिन बच्चों के पास...

बाबा- तो जिनको नहीं ह॥ तो अपनी रोटी-दाल खायें। कोई जरूरी ह॥ पक्का जमा करना ह॥ प्रॉपर्टी रखने के लिए तो बाबा ने पक्का ही मना किया ह॥

जिज्ञासु- नहीं, प्लॉट खरीदने के लिए।

बाबा- फिर वही प्लॉट। न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी। तेते पाँव पसारिये जेती लाम्बी पौर; घर में नहीं ह॥ दाने और अम्मा चली; क्या? भुनाने।

जिज्ञासु- और बाबा जो खरीद लेंगे; जो बच्चे खरीद रहे ह॥ पक्के वाले...

बाबा- जिनके पास पक्के ह॥ सो खरीद रहे हैं।

Student: In Mt. Abu.

Baba: So, at least as long as they have the hope to live in this old body; they can invest it where there is hope [to survive]. Because it has already been said in the murli: “This entire Abu will have to be purchased, only then will the children be able to come and stay here; you children will see the destruction of the entire world while sitting here, at Mt. Abu”. So, if you think it is correct, do it; if you don’t think so, don’t do it.

Student: Baba, we do think [it is correct] but the children who don’t have money....

Baba: So, those who don’t have [money] can eat their bread⁷. Is it necessary to collect money? Baba has anyway prohibited making property.

Student: No, in order to purchase a plot.

Baba: Again [you are speaking] about the same plot. Neither will there be nine measure of oil, nor will Radha dance; stretch your legs out only to the extent there is the bed; there are no grains at home and the mother has set out to... what?... parch them.

Student: And Baba those who will purchase it; the wealthy children who are purchasing it...

Baba: Those who have money are purchasing it.

⁷ roti-dal

जिज्ञासु- तो उनको अपना अहंकार नहीं आयेगा कि हमने खरिदा?

बाबा- अरे, तो पक्षा बैंकों में बर्बाद हो जाये, पक्षा जमीन में खोद करके गाढ़ दे और भूकंप आये, इधर-उधर हो जाये। पक्षे को सोना बनाकर घर में रखें और चोर-लुटेरे लूट ले जायें, उससे तो अच्छा है कि कम से कम हम किसी काम में नहीं ला सकेंगे तो माउन्ट आबू के ईश्वरीय कार्य में तो आ जायेगा। कि नहीं आ जाएगा? आ जाएगा।

Student: Will they not develop the ego: "we have purchased it"?

Baba: Arey, the money may be wasted in the banks, if you burry money underground, there may be an earthquake and the money will go somewhere else. If you turn all the money into gold and keep it in your house, the thieves and dacoits may loot it, it is better than [all] these that if we won't be able to use it in any work, at least it will come in use for the godly service at Mt. Abu. Or will it not? It will [come in use].

समय: 37.55-38.50

जिज्ञासु: बाबा, बोला है कि अंत में तीन ठौर बचेंगे।

बाबा: परमधाम बचेगा, सूक्ष्मवतन बचेगा और साकार वतन बचेगा। सुखधाम बचेगा, शांतिधाम बचेगा। तो क्या?

जिज्ञासु- सूक्ष्मवतन तो कुछ होता ही नहीं ना बाबा।

बाबा- सूक्ष्मवतन कुछ होती ही नहीं? और ये इतने सब मरेंगे अकालेमौत में, भूकंप आयेंगे, बड़ी-2 बिल्डिंगे गिरेंगी; जिन बड़ी-2 बिल्डिंगों में करोड़ों की तादाद में लोग रहे पड़े हैं आज की दुनिया में, मल्टीस्टोरिज में वो शरीर अचानक छोड़ेंगे तो कहाँ जायेंगे?

जिज्ञासु- प्रवेश करेंगी।

बाबा- हाँ, सूक्ष्मशरीर में रहेंगे ना? तो जो सूक्ष्मशरीर धारण करेंगे वही सूक्ष्मशरीर सूक्ष्मवतन है उनका।

जिज्ञासु- उसको सूक्ष्मवतन कहेंगे?

बाबा- और क्या?

Time: 37.55-38.50

Student: Baba, it is said that three places will survive in the end.

Baba: The Supreme Abode, the subtle world and the corporeal world will survive. The Abode of Peace [and] the Abode of Happiness will survive. So, what?

Student: Baba there is nothing such as the subtle world.

Baba: Is there nothing such as the subtle world? And these many people, who will die an untimely death; earthquakes will occur, the big buildings will collapse, the big buildings, the multistoried buildings in which billions of people are living in today's world; if they die suddenly, where will they go?

Student: They will enter [someone].

Baba: Yes, they will have a subtle body, won't they? So, the very subtle body that they will take on is their subtle world.

Student: Will that be called the subtle world?

Baba: Certainly.

समय: 48.20-50.15

जिज्ञासु: बाबा, हम कभी भी किसी को भी किसी भी परिस्थिति में ज्ञान सुना सकते हैं क्या?

बाबा: कुछ नियम बनाये हुए हैं- पुरुषों को पुरुष ज्ञान सुनावे, कन्याओं-माताओं को कन्याये-मातायें ज्ञान सुनावे। क्योंकि पुरुषों को सभी को दुर्योधन-दुशासन बोला ह॥ वो दुर्योधन-दुशासन वृत्ति किये बिगर चूकते नहीं ह॥और उन्होंने अगर ज्ञान सुनाना शुरू किया और उस वृत्ति में आ गये तो नुकसान किसका होगा? दोनों का होगा या एक का नुकसान होगा? दोनों का नुकसान हो जायेगा।

जिज्ञासु- नहीं तो पुरुष पहचान कर सकते ह॥कि ये सुनने लायक ह॥ये सुनने लायक नहीं?

बाबा- पुरुष कोई भी कत्सा भी हो पुरुष पुरुषों को ज्ञान सुनाये कोई हर्जा नहीं।

Time: 48.20-50.15

Student: Baba, can we narrate knowledge to anyone anytime and under any circumstances?

Baba: Some rules have been made: let the males narrate knowledge to the males, let the virgins and mothers narrate knowledge to the virgins and mothers. Because all men are called Duryodhan Dushasan⁸. They don't miss a chance to behave like Duryodhan Dushsan and if they start narrating knowledge and develop that tendency, who will incur a loss? Will both of them incur a loss or will one of them incur a loss? Both will incur a loss.

Student: Then, can the males distinguish between people that this one is capable of listening and this one is not?

Baba: Let it be any male, whatever he is like; there is no problem if a male narrates knowledge to another male.

जिज्ञासु- तो उसकी पहचान नहीं कर सकते ह॥कि ये सुनने लायक ह॥कि नहीं ह॥

बाबा- हमारे कुल का होगा तो थोड़ा भी सुनेगा तो खिंचा हुआ चला आवेगा, ये पहचान हो गई।

जिज्ञासु- और अगर कोई निंदा करे भगवान की तो.....

बाबा- शुरू-शुरूआत में तो सभी निंदा करते ह॥ जब पहचान नहीं ह॥तो निंदा ही करेगा और वो भी जब हम डायरेक्ट ये बतावेंगे कि भगवान आया हुआ ह॥तो निंदा करेगा ना? तुम बाहर के गुरुओं को कहते हो कि वो असुर ह॥हिरण्यकश्यप ह॥और तुम खुद कहते हो भगवान साकार में आया हुआ ह॥तो मान लेगा क्या? सुनाने की युक्ति चाहिए। ज्ञान भी इस तरह सुनाना चाहिए जो सुनने वाले को खुशी आ जाये। क्रोध आ जाये, वो ज्ञान का बीजारोपण नहीं ह॥अज्ञान का बीजारोपण ह॥

Student: So, can't they distinguish between people that this one is worthy of listening and this one is not?

Baba: If someone belongs to our clan, he will come being pulled to us even if he listens a little. This is the indication.

Student: And what if someone defames God...

Baba: All defame in the beginning. He will certainly defame if he doesn't have the recognition. Moreover, if we say directly that God has come, he will defame [God], will he not? You say for the gurus of the outside world that they are demons, they are

⁸ Villainous characters in the epic Mahabharata.

Hiranyakashyap and [if] you yourself say that God has come in a corporeal [form], will he believe it? You should have the tact to explain. You should narrate knowledge in such a way that the listener becomes happy. If he becomes angry then that is not sowing of the seed of knowledge; it is sowing of the seed of ignorance.

समय: 50.22-52.20

जिज्ञासु: बाबा, कभी-2 जरा सी भी मेहनत नहीं करते हैं और अवस्था बहुत अच्छी बन जाती है और कभी मेहनत बहुत करने पर भी अवस्था नहीं बन पाती। तो एकरस अवस्था बनाने के लिए मुख्य कारण क्या है

Time: 50.22-52.20

Student: Baba sometimes our stage becomes very good without making even a little effort and sometimes our stage doesn't become good even after making a lot of efforts. So, what is the main method of attaining the constant stage (*ekras avastha*)?

बाबा: इस प्रश्न का जवाब कई बार दिया जा चुका है फिर भी सुनिये। बताया है कि ये रील घूम रही है 63 जन्मों की। बनी बनाई बन रही अब कुछ बननी नाय। 63 जन्मों में पाप भी किये हैं, कभी पुण्य भी किये हैं। तो जब पुण्यों की रील घूमती है पुण्यों का खाता खुलता है तो न चाहते हुए भी अवस्था अच्छी बन जाती है पुरुषार्थ विशेष न करने पर भी अच्छी अवस्था बनती है और जब पापकर्मों का खाता खुलता है या रील चालू होती है तो कितना भी पुरुषार्थ करें, कितनी भी मेहनत करें, कितना भी सतसंग करें तो भी अवस्था नहीं बनती है इसलिए ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए सदा, तो एकरस अवस्था रहेगी। जिसकी बुद्धि में ज्ञान टिकता नहीं है उसकी एकरस अवस्था भी नहीं रह सकती। और ज्ञान को टिकाने का मूल साधन है प्योरिटी। जितना हम दृष्टि को पवित्र बनायेंगे, जितना वाचा को पवित्र बनायेंगे, जितना अपनी कर्मेन्द्रियों को पवित्र बनायेंगे, व्यभिचारी नहीं बनायेंगे उतना हमारी बुद्धि सलामत बनी रहेगी।

Baba: This question has been answered many times; nevertheless, listen to it. It has been said that this reel of the 63 births is rotating. Whatever is happening is preordained and nothing new will happen now. We performed sins as well as noble actions in the 63 births. So, when the reel of the noble deeds rotates, when the accounts of the noble deeds opens, our stage becomes good even without our wishing for it to be so, we remain in a good stage even when we don't make any special *purusharth*. And when the accounts of the sinful actions opens or when the reel starts [rotating], our stage doesn't become good no matter how much *purusharth* we do, how hard we work, we remain in a virtuous company (*satsang*) to whatever extent. Therefore, knowledge should be in the intellect all the time, only then will you achieve the constant stage. The one in whose intellect knowledge doesn't remain cannot achieve the constant stage either. And the main instrument to make knowledge remain in the intellect is purity. The more we make our vision pure, the more we make our speech pure, the more we make our organs of action pure, we don't make them adulterous; our intellect will remain good to that extent.

समय: 52.23-53.50

जिज्ञासु: बाबा शिव ह्यनिराकार और शंकर ह्यसाकार, तो दोनो को...

बाबा: शंकर साकार ह्यकिसने कहा? किसी मुरली में कहा कि शंकर साकार ह्य

जिज्ञासु- शंकर का विगृह बनाते ह्यना शरीरधारी.....

बाबा- विगृह बनानेवाले जो हैं वो यह जानते हैं कि शंकर साकार ह्यआकार ह्यया निराकार ह्य ये तो बाबा ने हमको बताया ह्यकि रामवाली आत्मा दूसरा जन्म लेकर के जब से ज्ञान में आती ह्यतब से ही वो आकारी स्टेज धारण कर लेती ह्यअव्यक्त स्टेज हो जाती ह्य साकारी दुनिया जश्ने आप मुये मर गई दुनिया। इस दुनिया से कुछ भी लेना-देना नहीं। आकारी स्टेज हो जाती ह्यमनन-चिंतन-मंथन की स्टेज हो जाती ह्य सोचना ह्यतो नई दुनिया के बारे में सोचना ह्यकरना ह्यतो ईश्वरीय सेवा करना ह्य दूसरा कोई कर्म नहीं करना ह्य लौकिक धंधा भी ह्यतो उसको अलौकिक में पलट देना ह्य

Time: 52.23-53.50

Student: Baba, Shiv is incorporeal and Shankar is corporeal; so both of them...

Baba: Who said that Shankar is corporeal? Was it said in any murli that Shankar is corporeal?

Student: The idol of Shankar is prepared, isn't it? The bodily being...

Baba: Do those who make idols know whether Shankar is corporeal, subtle or incorporeal? It is Baba who has told us that when the soul of Ram comes in knowledge after taking another birth, he attains the subtle stage from that time itself; he attains an *avyakt* stage (incorporeal stage). It is as if [he attains the stage of] *aap mue mar gayi duniya*⁹ for the corporeal world. He doesn't have anything to do with this world. He attains a subtle stage; he attains the stage of thinking and churning. If he has to think something, he has to think about the new world, if he has to do something, he has to do godly service, He shouldn't perform any other action. Even if it is the *lokik* business he should transform it into the *alokik* business.

जिज्ञासु- बाबा शिव और शंकर को एक किया गया ह्यक्यों?

बाबा- अरे!

जिज्ञासु- मतलब कोर्स में समझाना था तो पुछा सवाल क्यों किया गया ह्य

बाबा- अब रोज वाणी तो सुनो कितनी बार ये बात बताई गई ह्यशिव-शंकर को भक्तिमार्ग में एक इसलिए कर दिया गया ह्यकि शंकर ने शिव की स्टेज को पहले-2 प्राप्त कर लिया। और दूसरों ने उस निराकारी स्टेज को प्राप्त नहीं कर पाया।

Student: Baba, Shiv and Shankar have been combined, why?

Baba: Arey!

Student: I had to explain it in a course; so someone asked me the question why [were they combined]?

Baba: Now, listen to the *vani* regularly; it has been said so many times that Shiv and Shankar have been combined on the path of bhakti because Shankar attained the stage [equal to] Shiv first of all and others were not able to attain that stage.

⁹ If you die the world is dead for you

समय: 53.57-55.15

जिज्ञासु- बाबा, आत्मा अपने पार्ट को नहीं जानती हूँ तो वो बुद्धू ऐक्टर हूँ।

बाबा- हाँ।

जिज्ञासु- तो सुदर्शन चक्र घुमाओ। सुदर्शन चक्र का रहस्य क्या है।

बाबा- अरे, कम से कम इतना तो घुमाये- सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, संगमयुग -2। इतना तो करे। छोटा बच्चा होता है उसको प्राइमरी स्कूल में बसाया जाता है तो कम से कम रटना सीखता है कि नहीं? क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ कितनी बार रटता है। अरे, बेसिक पढ़ाई का फाउंडेशन ही पक्का नहीं होगा तो ऊपर की पढ़ाई कैसे चढ़ेंगे?

Time: 53.57-55.15

Student: Baba, if a soul doesn't know his part, he is a foolish actor.

Baba: Yes.

Student: So, rotate the *sudarshan chakra* (the discus of self realization). What is the secret of the *sudarshan chakra*?

Baba: Arey, at least rotate this much: the Golden Age, the Silver Age, the Copper Age, the Iron Age, the Confluence Age – 2. Do at least this much. When a small child is put in the primary school, does he learn to by heart things or not? ka, kha, ga, gha, na, cha, chha, ja, jha, na...(Hindi alphabets) he learns it by heart so many times. Arey, if the foundation of the basic study itself is not firm then how will you learn the higher studies?

जिज्ञासु- थोड़े समय बाद तो दूसरें संकल्प आ जाते हैं ना?

बाबा- दूसरें संकल्प आते हैं तो उनको भगाओ। ये तो प्रकृति है। अभ्यासेन तु कौन्तेय वेराग्येण च गृह्यते। ये दुनिया खलास होने वाली है। अब बाबा की याद ही हमारा सबकुछ कार्य करेगी, बाबा हमसे सारी सेवा करायेगा। इसलिये बाबा की याद में रहना है। और सब छोड़, सब तज हर भज।

जिज्ञासु- याद में नहीं रहते इस कारण नहीं होता।

बाबा- नहीं। याद में रहो लेकिन कोई कोई की भी याद कर लो।

Student: Other thoughts emerge after some time, don't they?

Baba: If the other thoughts emerge, chase them away. This is indeed a practice. *Abhyasen tu kaunteya veragyen cha grahyite*¹⁰. This world is going to end, now only the remembrance of Baba will do everything for us; Baba will make us do all the service. That is why we should remain in Baba's remembrance. Leave everything else, leave everything and remember God¹¹.

Student: We don't stay in remembrance that is why we are unable to do so.

Baba: No. Do stay in remembrance but remember anyone!

¹⁰ God said to Arjuna: Oh, son of Kunti the mind can be concentrated through the practice of remembrance and detachment from the old Iron Age world.

¹¹ *sab taj har baj*: leave everything and chant the name of Har (a name for Shankar)

समय: 58.25-01.01.05

जिज्ञासु: बाबा रामवाली आत्मा पुरुषोत्तम संगमयुग में सबसे पहले कर्मेन्द्रियों पर जीत पाके जन्म-जन्मान्तर राजा पद पाती ह॥

बाबा- हाँ।

जिज्ञासु- तो बच्चों को भी बाप समान स्टेज बनानी ह॥

बाबा: ठीक ह॥

जिज्ञासु- तो बच्चों को अपनी कर्मेन्द्रियों को ... गुलाम कसे बनाये?

बाबा- खुला छोड़ दे। थोड़े टाईम स्वतंत्रता भी तो दे। स्वतंत्र रहो स्वतंत्र रहने दो। बाबा भी तो कहते हैं- स्वतंत्र रहो और स्वतंत्र रहने दो। खुद भी स्वतंत्र रहो और कर्मेन्द्रियों को भी खुला छोड़ दो लेकिन कर्मेन्द्रियाँ आत्मा से कनेक्टेड ह॥ आत्मा से कनेक्टेड ह॥ या स्वतंत्र ह॥ आत्मा से कनेक्टेड ह॥ और आत्मार्ये-2 आपस में स्वतंत्र ह॥ या एक-दूसरे से कनेक्टेड ह॥ (किसीने कहा- कनेक्टेड ह॥ कनेक्टेड ह॥ कनेक्टेड ही रहेंगी?)

Time: 58.25-01.01.05

Student: Baba, the soul of Ram gains victory over the organs first of all in the *Purushottam Sangamyug*¹² and attains position of a king for many births.

Baba: Yes.

Student: So, the children too have to make a stage equal to the Father.

Baba: This is correct.

Student: So, how should the children [gain victory] over their organs?

Baba: 'Leave them free! Do give them freedom for some time! Be free, let others be free! Baba also says: be free and let others be free. Be free yourself and let the organs be free too' (ironically); but the organs are connected to the soul. Are they connected to the soul or are they free? They are connected to the soul. And are the souls separate amongst themselves or are they connected to each other? (Someone said: They are connected). Are they connected? Will they remain connected?

जिज्ञासु- स्वतंत्र ह॥

बाबा- स्वतंत्र ह॥ इसलिए आत्मा को आत्मा के लिए स्वतंत्रता देनी ह॥ ये नहीं मेरी पत्नि ह॥ तो मैं इसे अपने कन्ट्रोल में रखूँ। नहीं। पत्नि ह॥ तो भी आत्मा-2 भाई-2 ह॥ वो जज्ञा पुरुषार्थ करेगी खुद पायेगी, मैं जज्ञा पुरुषार्थ करूँगा मैं पाऊँगा। तो आत्मा को आत्मा को स्वतंत्र रखना ह॥ लेकिन कर्मेन्द्रियाँ तो आत्मा से कनेक्टेड ह॥ हरेक आत्मा की अपनी-2 कर्मेन्द्रियाँ जब तक इस साकार शरीर में ह॥ तब तक कनेक्टेड ह॥ चाहे सूक्ष्मशरीर में हो, चाहे स्थूल शरीर में हो और कनेक्टेड ह॥ तो उनको कन्ट्रोल में रखना ह॥ पहले हमारा राज्य ये ह॥ ये शरीर रूपी राज्य ह॥ इसमें आत्मा राजा ह॥ कर्मेन्द्रियाँ हमारी प्रजा ह॥ नम्बरवार। कोई ज्ञानेन्द्रियों के रूप में ह॥ महामात्य ह॥ कोई सेनापती ह॥ कोई छोटे-2 अधिकारी ह॥ कोई बड़े अधिकारी ह॥ लेकिन ये सब हमारी प्रजा ह॥ यहाँ हम जितना इनको कन्ट्रोल करते ह॥ कन्ट्रोलिंग का अभ्यास करते ह॥ उतने वहाँ जाकर के बड़े राजा बनेंगे और यहां भी बनेंगे।

¹² The age in which the best among the souls is revealed

Student: They are independent.

Baba: They are independent. That is why a soul should give freedom to another soul. It shouldn't be like this: "this is my wife; so I should keep her under my control". No. Even if she is your wife, she is your brother as a soul. She will attain fruits according to whatever *purusharth* she makes, I will attain fruit according to whatever *purusharth* I make. So a soul should let another soul be free. But the organs are connected to the soul. As long as the soul is in the body, the organs of a soul are connected, whether they are in a subtle body or in a physical body; moreover if they are connected, you should keep them under control. This is our kingdom first. This is a kingdom in the form of the body, the soul is a king in this; the organs are our number wise subjects. Some are in the form of the sense organs, some [organ] is the prime minister, some [organ] is the army chief, some are small officers, some are big officers, all these are our subjects. The more we control them here, the more we practice to control them; we will become a bigger king over there and here as well.

समय: 01.02.01-01.02.38

जिज्ञासु- बाबा, लौकिक परिवार ह॥लोहे की जंजीर और अलौकिक परिवार ह॥सोने की जंजीर। तो सोने की जंजीर तो ज्यादा कीमती होती ह॥

बाबा- ठीक ह॥

जिज्ञासु- तो बाबा फिर उससे परे कसे जायेंगे?

बाबा- सोने की जंजीर बेच दो।

जिज्ञासु- किसको बेचे बाबा?

बाबा- किसको बेचे? जो खरीदता हो उसको बेच दो। कोई खरीददार आया कि नहीं? खरीददार आया हुआ ह॥

Time: 01.02.01-01.02.38

Student: Baba, the *lofik* family is the chain of iron and the *alofik* family is the chain of gold. So, the chain of gold is more valuable.

Baba: This is correct.

Student: So Baba, how to go beyond it?

Baba: Sell the chain of gold.

Student: To whom should we sell it?

Baba: To whom should we sell it? Sell it to the one who buys it. Has any buyer come or not? The buyer has come.

.....
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.